जनता के संगठन से पैदा होती है शक्ति : सैंतालीसवाँ न्यूज़लेटर (2026)



प्यारे दोस्तो,

ट्राईकॉन्टिनेंटल : सामाजिक शोध संस्थान की ओर से अभिवादन।

चार दशक पहले, मैं पश्चिम बंगाल के एक क़स्बे के एक पंचायत दफ़्तर में बैठा था। तभी एक महिला वहाँ आई और नगर निगम अधिकारी को बुरा-भला कहने लगी। वह एक खेत मज़दूर थी जिसने अपनी एक समस्या स्थानीय अधिकारी के सामने रखी थी पर उसका समाधान नहीं किया गया था (मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है कि उसने क्या शिकायत की थी या क्या अनुरोध किया था।)। उसके साथ खेत मज़दूर यूनियन (एक कम्युनिस्ट जनसंगठन) की स्थानीय कमेटी का एक सदस्य भी था, और उसने भी अधिकारी को फटकार लगाई थी। वह निर्वाचित अधिकारी भी स्थानीय कम्युनिस्ट आंदोलन से ही जुड़ा हुआ था और उसने इन दोनों की डाँट बहुत विनम्रता से सुनी ; माफ़ी माँगी और इस मसले को सुलझाने के लिए चला गया। वह महिला खुश होकर वहाँ से लौटी। अधिकारी ने बताया कि दफ़्तर में स्टाफ़ की कमी के चलते अक्सर काम होने में देरी हो जाती है, उस महिला की माँग या शिकायत बिलकुल जायज़ थी और उस पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी।

इस मुलाक़ात में मेरी दिलचस्पी दफ़्तर की मुश्किलों या अधिकारी के आश्वासन में नहीं थी, बल्कि दो दूसरी बातों में थी। पहली, उस महिला का आत्मविश्वास, जिसके बल पर वह अपनी बात अधिकारी के सामने रखने के लिए दफ़्तर आई थी। दूसरी, जनसंगठन के उस प्रतिनिधि की मौजूदगी, जो उसके साथ पहुँचा था। आदेशों का पालन करने की आदी रही एक महिला अपने साथी के साथ यह माँग करने आई थी कि आगे क्या होगा, इसमें उसकी भी राय ली जाए। उस पर आई मुसीबत शायद अब भी दूर नहीं हुई थी, लेकिन जो बात निजी हताशा बनकर रह सकती थी और जिसे उसे चुपचाप सहना पड़ता (और जो शायद धीरे-धीरे उसके भीतर नियतिवाद की भावना में बदल जाती), वह अब केवल उसकी निजी परेशानी नहीं रह गई थी, बल्कि सामूहिक संघर्ष के ज़रिए या संगठन के साथ से उसके अपने प्रयासों से भी बदली जा सकती थी। यह घटना आज भी मेरे जेहन में बनी हुई है, क्योंकि यह समाजवादी शक्ति की बुनियादों में से एक चीज़ को उजागर करती है—जिसे हम सामाजिक शक्ति कहते हैं।



हमारा नवीनतम डोज़ियर [illegible] (सत्ता के ढाँचे के अंतर्गत समाजवादी रणनीति) सत्ता के तीन परस्पर जुड़े हुए रूपों के बीच अंतर स्पष्ट करता है :

- सामाजिक शक्ति, जो कामगार वर्ग के संगठनों और सामूहिक क्षमताओं के ज़रिए विकसित होती है।
- सरकारी शक्ति, जो लोक प्रशासन के संस्थानों और नीति तक पहुँच प्रदान करती है जिनके माध्यम से किसी कार्यक्रम को लागू करने की कोशिश की जा सकती है।
- व्यवस्थागत शक्ति, जिसके ज़रिए राज्य के वर्गीय चरित्र और उत्पादन, संपत्ति तथा सामाजिक जीवन को संगठित करने वाले बुनियादी संबंधों को बदला जा सकता है।

शक्ति की यह बहु-स्तरीय समझ हमें समाजवादी रणनीति का एक बुनियादी प्रश्न पूछने का अवसर देती है : जन प्रतिनिधित्व वाले सामूहिक संस्थानों के माध्यम से लोग किस तरह इतने सक्षम और सशक्त बनते हैं कि वे अपने जीवन का संचालन खुद कर सकें और समाज को बदल सकें ? यह डोज़ियर एक ऐसे दौर में आया है जब यूरोप से लेकर भारत तक लोगों में व्याप्त ग़ुस्सा सड़कों पर **विरोध प्रदर्शनों** के रूप में उमड़ रहा है। लेकिन संगठन के लिए अपेक्षित धैर्य के बिना ये प्रदर्शन बिखरकर ख़त्म हो सकते हैं, जैसा कि अरब स्प्रिंग के साथ हुआ। यह डोज़ियर सवाल करता है कि किस तरह के संगठन, सार्वजनिक संस्थान और राजनीतिक क्षमताएँ इन लामबंदियों को एक मज़बूत और स्थाई सामाजिक शक्ति में बदल सकते हैं और इस शक्ति को सरकारी और व्यवस्थागत परिवर्तन के संघर्ष से जोड़ सकते हैं। हम मुक्ति के इसी संगठनात्मक ढाँचे की पड़ताल करना चाहते हैं। आप भी इन प्रश्नों पर हमारे साथ विचार करने की प्रक्रिया में जुड़ सकते हैं।

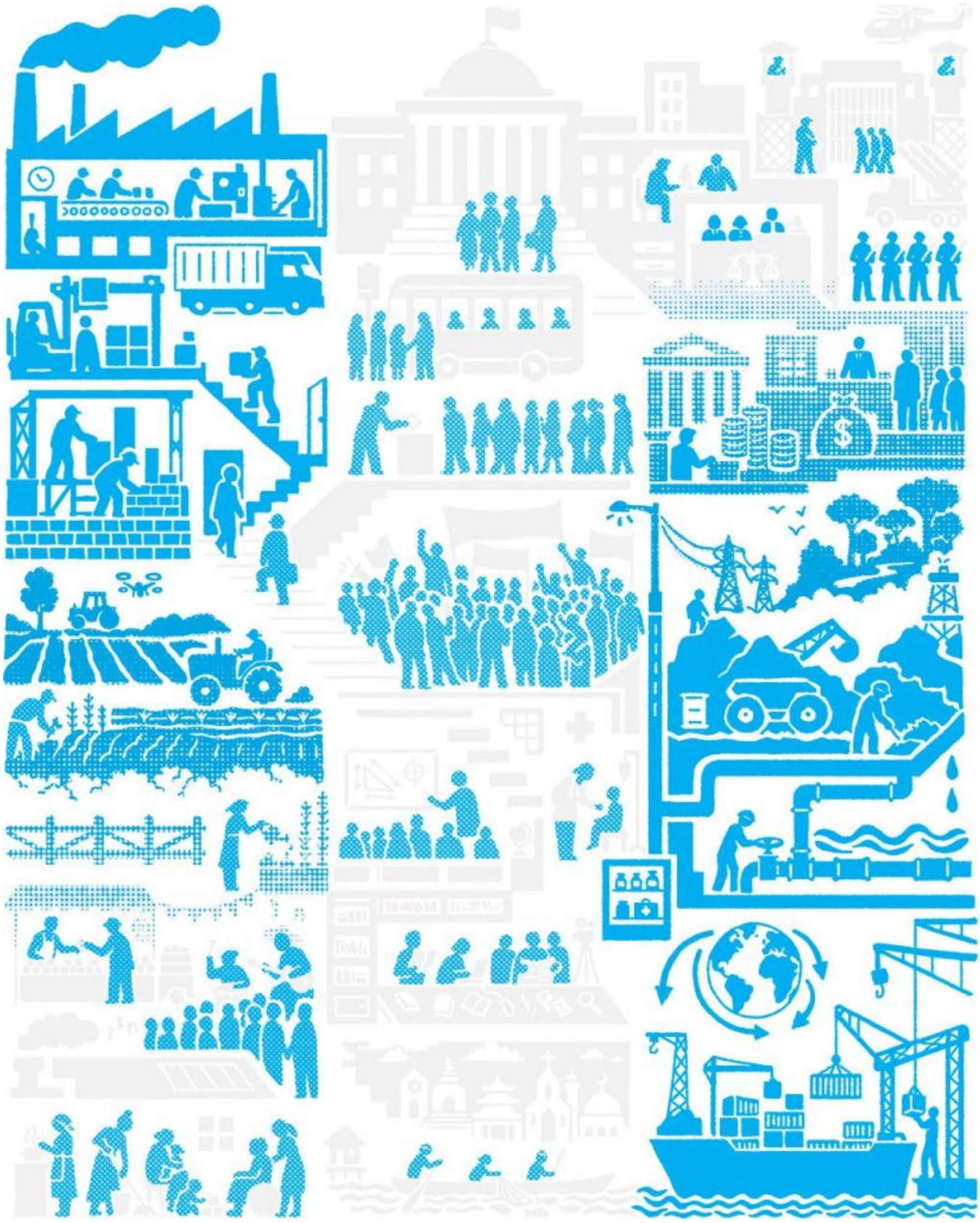


ट्राईकॉन्टिनेंटल में हम सामाजिक शक्ति के कुछ ठोस स्वरूपों का अध्ययन करते आ रहे हैं, जिनमें शामिल हैं केरलम का कम्युनिस्ट नेतृत्व वाला **सहकारिता आंदोलन** और ब्राज़ील में भूमिहीन मज़दूर आंदोलन (MST) द्वारा स्थापित **बसावटें**।

ये दोनों उदाहरण साबित करते हैं कि सामाजिक शक्ति का निर्माण बिखरी हुई लामबंदियों से नहीं किया जा सकता। सामाजिक शक्ति के लिए ज़रूरी हैं ऐसे संगठन जिनकी जड़ें जन अभियानों से गढ़े गए सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत में हों और जिसने ताक़तवर संस्थानों की रचना की हो। इन संस्थानों के माध्यम से उत्पीड़ित और शोषित लोग भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने, कार्रवाई का समन्वय करने, सामूहिक अधिकार का प्रयोग करने, और समय के साथ संघर्ष जारी रखने की क्षमता विकसित करते हैं। केरलम का उदाहरण दिखाता है कि वर्ग संघर्ष में निहित सामाजिक शक्ति किस तरह सरकारी शक्ति के साथ मिलकर सहकारी संस्थाओं को बनाए रखने और उनका विस्तार करने का काम कर सकती है। MST (भूमिहीन ग्रामीण मज़दूरों का आंदोलन) का अनुभव इस बात को और आगे बढ़ाता है। यह दिखाता है कि सामूहिक निर्णय लेने, राजनीतिक शिक्षा और निरंतर संघर्ष के जरिए सामाजिक शक्ति का निर्माण कैसे होता है और उसे किस तरह कायम रखा जाता है। MST की कार्यपद्धतियाँ ज़मीन हासिल कर लेने के बाद भी परिवारों को संगठित रखती हैं। साथ ही, वे मिल-जुलकर अपनी बात रखने, दूसरों की बात सुनने और सामूहिक रूप से लिए गए फ़ैसलों को अमल में लाने की लोकतांत्रिक प्रवृत्ति विकसित करने में मदद करती हैं।

सहकारी संस्थाओं का निर्माण करना या कोई बस्ती बसाना अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह एक लंबी प्रक्रिया का हिस्सा है। एक जीत संगठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की शुरुआत बन जाती है, कभी-कभी इससे सामाजिक शक्ति गहरी होती है और कभी इससे सरकारी शक्ति पर दावे को मज़बूत किया जा सकता है – हर ठोस जीत अगले संघर्ष के लिए जनता की क्षमता को विस्तार देती है। उदाहरण के लिए, जब लोगों को ज़मीन के अधिकार मिलते हैं तो हो सकता है, वे अपनी उस निजी ज़मीन तक ही सीमित हो जाएँ। इसलिए संगठित गतिविधि के लिए एक ऐसा संगठन बेहद ज़रूरी हो जाता है जिसकी जड़ें मज़बूत हूँ – जैसे कि MST के स्थानीय समूह, जहाँ सदस्य अपनी बसावटों के बारे में मिलकर फ़ैसले लेते हैं और एकजुट होकर काम करते हैं, या वे जन संगठन जो केरलम के सहकारिता आंदोलन को बरक़रार रखते हैं। इसके साथ ही राजनीतिक शिक्षा और निरंतर जारी कार्य भी आवश्यक हैं। पूंजीवाद मज़दूरों और किसानों को यह सिखाता है कि उनका अस्तित्व अपने पड़ोसियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने पर निर्भर करता है। लेकिन उनका अपना अनुभव बताता है कि रोज़मर्रा के जीवन में आपसी सहयोग कितना ज़रूरी है। बस्तियों और सहकारी संस्थाओं के रूप में यह सहयोग संस्थागत रूप भी लेता है। सामूहिक गतिविधियाँ मेहनतकश लोगों की ज़रूरतों को पूरा करके एकजुटता को ठोस आधार देती हैं और समाजवादी मूल्यों को रोज़मर्रा के जीवन में व्यवहार में उतारती हैं। पूँजीवादी व्यवस्था की परिस्थितियों से पैदा होने वाले तनावों के कारण सामाजिक विश्वास कमज़ोर पड़ता है, लेकिन साझा ज़िम्मेदारियों और प्रतिबद्धता को व्यवहार में साबित करने से यह विश्वास फिर मजबूत होता है।

हम इस शोध को दक्षिण अफ़्रीका की कम्युनिस्ट पार्टी के पीपल्स रेड कारवाँ, तंज़ानिया में लघु किसान समूहों के राष्ट्रीय नेटवर्क मतंदाओ वा विकुंडी व्या वाकुलिमा तंज़ानिया (MVIWATA) के कार्य, वेनेज़ुएला के कम्यून, और चीन में विलेज सुपर लीग जैसी ग्रामीण पुनरुद्धार परियोजनाओं के अध्ययन के ज़रिए जारी रखेंगे। ये अध्ययन जल्द ही प्रकाशित किए जाएँगे।



इन उदाहरणों से साफ़ होता है कि सरकारी शक्ति से सामाजिक शक्ति को मज़बूत किया जा सकता है : जब एक वामपंथी सरकार बनती है तो वह जन-संस्थानों की रक्षा और उन्हें सुदृढ़ करती है तथा सार्वजनिक संसाधनों का प्रयोग इनके काम

को विस्तार देने में करती है। लेकिन इसके साथ ही सरकारी शक्ति राज्य के व्यापक ढाँचे से और अपने नियंत्रण से बाहर अर्थव्यवस्था से बँधी रहती है। ये राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर और बाहर दोनों जगह वित्त और निगमों की अपार शक्ति के माध्यम से संचालित होते हैं – जैसा कि हमने अपने डोज़ियर **ध्रुवीकरण से परे : विश्व व्यवस्था के लिए एक मार्क्सवादी अवधारणा** में लिखा था – साथ ही **अति-साम्राज्यवाद** की अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और तंत्रों के माध्यम से भी।

पूँजीवाद के तहत ये संरचनाएँ शासक वर्ग की सत्ता को बनाए रखती हैं और भारी बहुमत की अपनी लोकतांत्रिक शक्ति का इस्तेमाल करने की क्षमता को कमज़ोर करती हैं। वैश्विक दक्षिण के देशों में राष्ट्रीय संप्रभुता को आगे बढ़ाने के लिए सरकारी सत्ता का इस्तेमाल करने की कोशिशों के सामने न केवल अंतरराष्ट्रीय और नव-औपनिवेशिक दबाव होते हैं, बल्कि देश के भीतर मौजूद वे वर्गीय ताक़तें भी होती हैं, जिन्हें परनिर्भरता से लाभ मिलता है। यही वजह है कि व्यवस्था को बदलने के लंबे संघर्ष के लिए सामाजिक शक्ति की गहरी जड़ें होना ज़रूरी है।



पश्चिम बंगाल में कृषि मज़दूरों की यूनियन उस महिला मज़दूर के साथ आई थी, ताकि वह अपने ही राजनीतिक आंदोलन से निकले एक अधिकारी के सामने अपनी माँग रख सके। उनके बीच साझा प्रतिबद्धता होने का यह मतलब नहीं

था कि महिला को अपनी माँग खुद रखने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन इसने उसे वह आधार ज़रूर दिया, जिसके बल पर वह इस बात पर ज़ोर दे सकी कि उसकी माँग को गंभीरता से लिया जाए और वह उस मुलाक़ात से कुछ हासिल करके लौटे। उस महिला का आत्मविश्वास और अधिकारी की उसकी बात पर ध्यान देने की तत्परता हमें यह समझाती है कि मेहनतकश लोगों और उनकी सेवा के लिए चुने गए प्रतिनिधियों के बीच संबंधों को लगातार नया और मज़बूत बनाते रहना कितना ज़रूरी है। मेहनतकश लोगों को ऐसे संगठनों की ज़रूरत है, जिनके माध्यम से वे सामूहिक रूप से अपनी ताक़त का इस्तेमाल कर सकें और अपने प्रतिनिधियों को जवाबदेह बना सकें।

ऐसा संबंध तब और भी मुश्किल हो जाता है जब प्रशासन के दबाव किसी वामपंथी आंदोलन के सबसे अनुभवी संगठनकर्ता को उन मोहल्लों और कार्यस्थलों से दूर खींच लेते हैं जहाँ उनकी राजनीतिक शक्ति बनी थी। सरकार को दक्षिणपंथ से बचाने की तात्कालिकता हर आलोचना को एक ख़तरे की तरह दिखा सकती है, और यह आज्ञाकारिता तथा पदानुक्रम की आदतों को बढ़ावा दे सकती है। यदि श्रमिक जनता से केवल मतदान करने, तालियाँ बजाने और प्रतीक्षा करने के लिए कहा जाए, तो वह सामाजिक शक्ति कमज़ोर पड़ने लगती है जिसने सरकार को सत्ता में पहुँचाया था। एक वामपंथी सरकार को जनता की संगठित पहल की आवश्यकता होती है, जिसमें विफलताओं को पहचानने और उन्हें सुधारने की माँग करने की उनकी क्षमता भी शामिल है।



सामाजिक और सरकारी शक्ति में बेहतरी और व्यवस्थागत बदलाव की तरफ़ बढ़ा हुआ हर क़दम अपने साथ नई ज़िम्मेदारियाँ और अंतर्विरोध लेकर आते हैं। राजनीतिक शिक्षा, आलोचना और ईमानदार समीक्षा इन अंतर्विरोधों से निपटने में आंदोलनों की मदद करते हैं और लोकप्रिय सत्ता को जनता से जोड़े रखने में भी। संगठन का धैर्यपूर्ण कार्य

रोज़मर्रा के उस व्यवहार के माध्यम से आकार लेता है जो ज्ञान का निर्माण करती हैं और कामगार जनता को बड़ी ज़िम्मेदारियाँ लेने का आत्मविश्वास देती हैं। एक नई दुनिया तब बनती है जब कामगार जनता उन संस्थाओं और परिस्थितियों पर अधिकार का प्रयोग करने की क्षमता प्राप्त कर लेती है जो उनके जीवन को आकार देती हैं।

चार दशक बाद, मुझे आज भी उस दफ़्तर में आई महिला याद है। उसकी एक शिकायत थी, उसके पीछे एक संगठन था और उसके मन में जवाब माँगने का आत्मविश्वास। समाजवादी रणनीति के सामने यह सवाल है कि इस आत्मविश्वास को लाखों लोगों की संगठित शक्ति में कैसे तब्दील करें जो उन हालात को बदलने की क्षमता रखती हो जिनसे करोड़ों लोगों की ऐसी शिकायतें खड़ी होती हैं।

उस महिला का आत्मविश्वास यूँ ही पैदा नहीं हुआ था। उसके पीछे खड़े संगठन ने उसे यह आत्मविश्वास दिया था और उसे यह एहसास कराया था कि अपनी शिकायत को नियति मानकर चुपचाप स्वीकार करने की ज़रूरत नहीं है। ग्वाटेमाला के क्रांतिकारी कवि ओटो रेने कास्तियो ने 'लो मास इम्पोर्टांटे दे तोदो' (सबसे महत्त्वपूर्ण बात) में इससे अधिक कठोर परिस्थितियों में कुछ ऐसा ही दिखाया है। सेना द्वारा अधिक रोटी की माँग को लेकर रेलवे मज़दूरों की हड़ताल को कुचल देने के बाद, कुछ मज़दूर हार को स्वीकार करने लगते हैं। लेकिन उनमें से एक मजदूर हार को नियतिवाद में बदलने से इनकार कर देता है। उसका क्रांतिकारी आशावाद केवल आशा नहीं है। यह सामूहिक संघर्ष के अनुभव और इस विश्वास से उपजता है कि एक असफलता संगठित होने और फिर से लड़ने की क्षमता को समाप्त नहीं करती :

> याद रखना,
> कॉमरेड,
> समय अपने साथ
> एक लाल मुस्कान लेकर आता है,
> जिसमें जनता के जनादेश की खुशबू बसी होती है।
> अगर आज नहीं, तो कल।
> अगर कल नहीं, तो फिर कभी।
> हर हार के बाद
> एक नया कल ज़रूर आता है।
> और जिन्हें आज सताया जा रहा है,
> वे कल सताने वालों को खदेड़ेंगे।
>
> तो सबसे जरूरी बात यह है :
> हमेशा जनता से संवाद करते रहना।
> कड़वी से कड़वी हार के क्षणों में भी
> और गहरी से गहरी निराशा के दौर में भी,
> इसे कभी मत भूलना,
> साथियो :
> क्रांति शब्द के साथ
> आशा शब्द
> हमेशा जुड़ा रहता है।

स्नेह सहित,

विजय